५ यशोधरा काव्य में नारी भावना

नारी मानव समाज की आधार-शिला है । नारी अनेक रूपों में नर की शक्ति एवं प्रेरणा तथा पुरुष के अस्तित्व एवं विकास का मूल रही है । विश्व के अनेक संत एवं विचारकोंने नारी के बारे में अपने अपने विभिन्न मत प्रकट किए है । मनु के अनुसार " जिस घरमें स्त्रियों की पूजा होती है वहीं देवता रमते है ।"[१] जिस समाज में नारी को आदर मिलता है उस समाज की संस्कृति संसार में अपना एक अलग अस्तित्व बनाए रखती है । भारत के सामाजिक इतिहास में नारी के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान था ।

बीसवीं सदी से ही देश में पुनर्जागरण की शुरुआत हुई, वैज्ञानिक युग और पाश्चात्य संस्कृति के कारण भारत में अनेक महापुरुषों का प्रादुर्भाव हुआ । स्वामी विवेकानंद, राजाराम मोहनराय, दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर इत्यादिने अपने विचारोव्दारा पुनर्जागरण को भारतीय वातावरण के अनुरूप आत्मसात् करने में सहायता की । साहित्य के क्षेत्र में पुनर्जागरण के प्रतिनिधी के रूपमें रवीन्द्रनाथ और मैथिलीशरण गुप्त हुए ।

मैथिलीशरण गुप्तजी हिन्दी काव्यजगत में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के महान अग्रदूत रहे हैं । वे नारी स्वभाव के विशेषज्ञ तथा उनके मनोविज्ञान के पण्डित थे । गुप्तजीने अपने काव्य में नारी को अपने पाँवो के बराबर कदम बढाकर चल सके, स्वतंत्र अस्तित्व रखकर भी स्पूर्तिदायक हो,

---

१] मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी विविध भूमियां - डा. उमा शुक्ल, पृ. २२

इस कल्पना को मूर्तिमान करने में उन्हें भारत के प्राचीन नारी - चरित्रों से प्रेरणा मिली है । डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार "गुप्तजीने स्त्रियों में भारतीय आदर्श के ढाँचे में दिव्यता भरने की चेष्टा की है । स्त्रियों का जो भारतीय आदर्श दीर्घकालीन परंपरायुक्ति के कारण अनुदार और रूखासा दीखने लगा था और क्रांति के स्फुलिंगों की विस्फोटन के लिए प्रेरीत कर रहा था, उसी को नये भावुक तर्क से सजाकर नयी आत्मा से अभिसिंचित कर दिया है ।"[१]

गुप्तजी भारतीय संस्कृति के पुजारी रहे है अत: नारी भावनापर भी भारतीय संस्कृति के उदात्त तत्वों की छाप है । गुप्तजी के काव्यमें नारी के प्रति श्रध्दा और सम्मान अधिक मिलता है । वास्तव में कविने अपने काव्यमें युगोसें उपेक्षित और पौराणिक नारी को महत्व दिया है । अनेक वर्षोसे चले आ रहे नारी के प्रति पुरुष पक्षपात, अनादर और अविश्वास को देखकर भावुक कवि कहते है -

" अबला - जीवन हाय । तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखो में पानी ।"

अर्थात् कवि की दृष्टि नारी के मातृत्व और पत्नीत्व दोनों पर दिखायी देती है । लगता है नारी जीवन "आँचल के दूध और आँखों के पानी" में आकर प्रतिबिम्बित हो उठा है । यशोधरा एक ओर तो सिध्दार्थ के वियोग में अश्रु प्रवाहित करती रहती है तो दूसरी ओर राहुल का भरण-पोषण करती है। श्री सुरेश सिन्हाने उचित ही कहा है -

---

१] मैथिलीशरण गुप्त - दीक्षित आनन्दप्रकाश - पृष्ट - ९७

" गुप्तजीने अपने काव्य-ग्रन्थों में नारी का रूप सँवारा है और उनकी नारी कल्पना - प्रसूत न होकर एक शाश्वत मानवी होती है । उन्होंने अपने काव्य में वैसी नारी को पक्षय दिया है जो अलौकिक जगत की न होकर लौकिक जगत् की है । उनकी नारी असाधारण गुणोंसे पूर्ण होने के बावजूद एक साधारण नारी है, जिसकी ओर हम भारतीयों का ध्यान स्वत: आकृष्ट हो जाता है । ऐसे नारी पात्रों में यशोधरा, उर्मिला, कैकेयी, माँडवी, कौशल्या एवं सुमित्रा है । इन्हीं पात्रों के व्दारा गुप्तजीने नारी की परिभाषा को पूर्ण बनाया है ।"[१]

बौध्द साहित्य एवं इतिहास ग्रन्थों में यशोधरा स्थूल जीवन घटनाएँ उपलब्ध नहीं थी और फिर गुप्तजी का उद्देश्य यशोधरा के जीवन वृत्त को प्रस्तुत करना न होकर उसके उपेक्षित नारीत्व की पुन: प्रतिष्ठा था, इसका आरंभ भी सिध्दार्थव्दारा किये गये महाभिनिष्क्रमण से ही हुआ है । सिध्दार्थ पत्नी बनते ही उसे वनगमन की आशंका होने लगी थी, अंत में सिध्दार्थ वनगमन जाते है पतिव्दारा महान् लक्ष्य की सिध्दि के लिए जाते हुए प्रदर्शित इस भीरुता एवं नारीत्व के प्रति अविश्वास को देख स्पष्ट शब्दों में यशोधरा कहती है -

" सिध्दि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात ।
पर चोरी - चोरी गये, यही बडा व्याघात
सखि वे मुझसे कह कर जाते,
वह, तो क्या मुझ को अपनी पथ बाधा ही पाते?

इन पंक्तियो में नारी के जागृत स्वाभिमान और आत्मगौरव की गंध आती है वह कवि के अपने युग की देन है।

१] गुप्तजी और उनकी यशोधरा - प्रो. कृष्णमोहन अग्रवाल - पृ. ४४

कवि गुप्तजीने यशोधरा के पत्नीत्वपर प्रकाश डालते हुए दिखाया है कि वह अपने समय की सुन्दरियों में से थी और सिध्दार्थने उनकी सराहना करते हुए उसे अपनाया था। यशोधरा अपने सौभाग्यपर गर्व करती थी और यशोधरा के सखियोंने भी उसके सौभाग्य की प्रशंसा की थी। विवाहोपरान्त वह अपने पति के कार्य कलापों में हाथ बँटाती थी, जैसा कि उसकी इस उक्ति से स्पष्ठ है -

रोहिणी हाय। यह वह तीर,
बैठते आकर जहां वे धर्मधन, ध्रुवधीर।
मैं लिए रहती विविध पक्वान, भोजन खीर,
वे चुगाते मीन मृग खग हंस केली कीर।"

किन्तु शीघ्र ही उसका माथा ठनकने लगता है जब वह यह देखती है कि सिध्दार्थ की मनोभावनाएँ चिन्तन की ओर अधिक झुकी रहती है। वह एक दिन उनसे परिहास में पूछ ही लेती है -

" ध्यानमग्न देख उन्हें एक दिन मैंने कहा -
क्यों जी प्राण वल्लभ कहूँ या तुम्हें स्वामी मैं।"

और स्वपति का यह उत्तर सुनकर शान्त हो जाती है -

चौंके कुछ लज्जित से, बोले हँस आर्य पुत्र -
योगेश्वर क्यों न होऊ, गोपेश्वर नामी मैं ?
किन्तु चिन्ता छोडो, किसी अन्य का विचार करू,
तो हूँ जार पीछे, प्रिये। पहले हूँ कामी मैं।"

फिर भी वह सिध्दार्थ की ओर से पूर्णत: आश्वस्त नहीं हो पाती, उसे सदैव यह भय रहता है कि न जाने कब सिध्दार्थ गृहत्याग करके वनों की ओर

चलते वनें । इसी भावनामें मग्न रहने के कारण वह ऐसा स्वप्न देखती है जिसमें उसे सिध्दार्थ गृहत्याग करने दृष्टिगोचर होते है और वह पुकार उठती है -

" नाथ कहाँ जाते हो१
अब भी यह अन्धकार छाया है । "

और जब वह जाग जाती है तो उसके मुखसे यह दु:ख भरे नि:श्वास किल पडते है -

" हा१ जागकर क्या पाया,
मैंने वह स्वप्न भी गँवाया है ।"

गुप्तजी की कुसुमसी सुकोमल यशोधरा को वज्रसी कठोर बनने के लिए विवश कर देता है । आत्मसम्मान पर पडी चोट की प्रतिक्रिया स्वरूप ही वह कहती है कि -

विदा न लेकर स्वागत से भी वंचित यहाँ किया है,
हन्त । अन्त में यह अविनय भी तुमने मुझे दिया है ।"

अर्थात् अब तक तो तुम से जो कुछ मिला, वह तो मिला ही परन्तु अविनय की इस धृष्टता के दाता भी तुम ही बने हो । स्पष्ट है कि "यशोधरा" की नारी इस कटु सत्यसे पूर्णतया परिचित है कि इस पुरुष प्रधान समाज में नारी की दयनीय स्थिति के लिए पुरुष ही दोषी है ।

" यशोधरा" की इस नारी की महानता का मूल कारण है अपने कर्तव्यों के पालन में निष्ठा । जीवन को सही अर्थोंमें जीने में विश्वास करनेवाली यशोधरा अपने यौवन में ही जान पडी पति वियोग की दारुण व्यथा को न सह पाने के कारण जहाँ जीवन की अपेक्षा मृत्यु का वरण श्रेयस्कर

समझती है और उसे आज मरण भी सुन्दर प्रतीत होता है वहाँ वह चाहकर भी नहीं मर सकती, क्योंकी –

" स्वामी मुझको मरने का भी दे न गये अधिकार,
छोड गये मुझपर उस राहुल का सब भार । "

और कर्तव्यबोध की यही भावना उसे आत्म दुःख की व्यापक भावभूमिपर रखकर, सारे संसार के दुःख के साथ एकात्म स्थापित करने में सहायक देती है कि –

" मैंने ही क्या सहा, सभीने –
मेरी बाधा – व्यथा सही । "

सिध्दार्थ पत्नी यशोधरा के माध्यमसे जिस राहुल जननी यशोधरा का परिचय मिलता, वह सम्भवत: इस बात से पूर्णतया विज्ञ है कि परिवार ही सामाजिक गुणों का पालन होता है । परिवार में ही रहकर ही मानव शिशु कल का एक आदर्श नागरिक बना करता है और इन आदर्श गुणों की सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका माँ अर्थात नारी हो सकती है । यशोधरा सुख त्यागकर इसीलिए जीना चाहती है, क्योंकी वह जानती है कि अतीत तो उसे उत्तरधिकारमें ही प्राप्त हुआ था, परन्तु राहुल को अपने आदर्शों के अनुकूल ढालकर वह कल के लिए एक ऐसे पुरुष समाज का निर्माण कर पायेगी जोंकि अपने पूर्वजों की ही तरह नारी के प्रति क्रूर अथवा उदासीन न होगा । अपने इस भविष्य की ओर संकेत करती हुई वह कहती है –

" मेरा शिशु – संसार वह
दूध पिये परिपुष्ट हो । "

अपने इस शिशु संसार को पालने के लिए ही वह आत्म त्याग में भी संतोष ही अनुभव करती है क्योंकी " गोपा गलती है, पर उनका राहुल तो पलता है " और इस राहुल को पालने के लिए वह अपने व्यक्तिगत दुखों तक बिसरा देती है । परंतु इतना होनेपर भी जब राहुल अपने ही पिता का अनुसरण कर मुक्ति का संधानने का प्रस्ताव करता है तो वह चीत्कार कर उठती है -

" हाय । मैं हँसू या आज रोऊँ इस भाव से१
मुझ सी न रोयेगी क्या तेरे बिना वह भी१"

यहाँ यशोधरा का संकेत राहुल का भावी पत्नी की ओर ही है । वह तो केवल यह मानती रही है कि गृहस्थाश्रम ही सभी आश्रमों का पोषक है। यदयपि यह सही है कि गृहस्थाश्रम का पालन करनेपर अनेक सांसारिक दुखों का सामना व्यक्ति को करना पडता है ।

यशोधरा राहुल के पालन पोषण में तन्मय हो जाती है और उसको छोटासा सलौना छौना बताती हुई, हंस गाकर अपने विरह काल को यापित करने लगती है । वह ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उसे राहुल के किलकने और क्रिडाओं के अवेक्षण का सौभाग्य अनवरत रूपमें उपलब्ध होता रहे -

" दैव बनाये रक्खे राहुल, बेटा, विचित्र तेरी क्रीडा,
तनिक बहल जाती है, उसमें मेरी अधीर पीडा - क्रिडा ।"

भारतीय परम्परा में वह पुरुष की अनिवार्य आवश्यकता के रूपमें प्रकट हुई है। साथ ही बौध्दिक, आध्यात्मिक क्षेत्र में भी वह उच्च है । दृश्य की विशालता, सहानुभूति उसके आभूषण रहे हैं । मनुष्य नारी का

उपकार नहीं भूल सकता । "यशोधरा" के गौतम इसीलिए कहते है -

"दीन न हो, गोपे । सुनो, हीन नहीं नारी कभी
भूत दया - मूर्ति वह मन से, शरीर से ।

इसी उपयोगिता के कारण नारी गुप्तजी के समस्त काव्य में सदैव उज्ज्वल रूपमें चित्रित हुई है ।

यशोधरा मरने का अधिकार भी पति से ही माँगती है । प्रकृति उनकी भावनाओंपर और सान चढा देती है । चातक की पी पी रट उसके हृदय में काँटे सी खटकने लगती है ।

" फलों के बीज फलों में फिर आये,
मेरे दिन फिरे न हाय "

नारी अबला जीवन बिताती हुई अवतार पडनेपर सबला हो जाती हैं । सदैव आँसू बहानेवाली घोर से घोर कष्ट उठा लेती हैं । प्रो. धर्मेन्द्रने ठीक ही लिखा है - "गुप्त जी कवि - संसार की प्राय सभी नारियों का अवतरण तो अबला रूप होता है, किन्तु पुरुषों के तिरस्कार की चोर खाकर वही अबला प्रबला में परिवर्तित हो जाती है ।"[1] किन्तु मातारूपमें वात्सल्य - भावकी प्रधानता भी इन नारियों में है । "यशोधरा" काव्य में यशोधरा राहुल के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करती राहुल के रोनेपर कभी खीझती है और कभी उसे गोदमें उठा लेती है । कहीं डिठौना लगती है फिर कथाएँ सुनाकर उसका मन भी बहलाती है ।

आदिकाल से हमारे यहा पुरुष ही अधिकतर कवि हुए हैं । उन्होंने नारी का मनमाना चित्रण किया है । नारी को या तो उन्होंने विषय वासना का या मनोरंजन साधन बनाया है । परन्तु गुप्तजीने नारी की

१] मैथिलीशरण गुप्त - दीक्षित आनन्द प्रकाश - पृ. १०२

सौम्यता आद्रता एवं महान गुणोंका वर्णन किया है । स्वयं गुप्तजीने कहा था कि "हमारे काव्य के दो ही शृंगार है - प्रथम तो राष्ट्रप्रेम और द्वितीय नारी।"[१] गुप्तजी का मुख्य उद्देश्य ही काव्यरचना करके नारी भावना का स्वस्थ चित्रण करना है । गुप्तजी नारी भावना में सत्यं शिवं सुन्दरं की त्रिवेणी प्रवाहित करते हुए उसे सर्वोत्कृष्ट आदानप्रदान किया है ।

१] मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य - डॉ. द्वारका प्रसाद मीतल
पृ. १८३